Name: Chhama
Supervisor – Prof Hemlata Mahishwar
Department – Hindi
Title - Samakalin Stri Rachnayein Ki Kavitao Mei Pradhinta Aur Mukti Ka Sawrup

समकालीन समय में अनेक स्त्री रचनाकार कविताओं के माध्यम से पितृसत्ता की जकड़नों का वर्णन कर रही हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था समाज में स्त्री को दोयम दर्जा प्रदान करती है। जहां औरतों को पुरूष की इच्छा से काम करना, रहना, आज्ञा मानना सिखाया जाता है। परन्तु नारी मुक्ति, इन जकड़नों, इन वर्जनाओं को तोड़ने के लिए संघर्ष करना सिखाता है। नारी मुक्ति स्त्री को उनके प्रति होने वाले अपराधों, अन्यायों के प्रति जागरूक करता है।

नारी मुक्ति आन्दोलन ऐसे समतामूलक समाज के निर्माण पर बल देते हैं जहां नर–नारी समान हों। कोई किसी का मालिक और दास न हों। स्त्री समानता का मुद्दा स्त्रियों के विषेषाधिकार के लिए सामाजिक बदलाव को आवष्यक मानता है।

समकालीन स्त्री रचनाकार स्त्री चेतना सम्पन्न रचनाओं के साथ साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। यह रचनाकार स्त्रियों की व्यथा और पीड़ा को स्त्री के नजरिए से उकेरकर समतामूलक व सुधारात्मक सामाजिक दृष्टि की निर्मिति पर बल देती है। अपनी कविताओं के द्वारा यह रचनाकार समकालीन सामाजिक लिंग भेद वाली मानसिकता और समाज में जूझ स्त्री की विसंगतियों एवं जटिलताओं का वर्णन करती है।

यह रचनाकार नारी को नारी की दृष्टि से प्रस्तुत करना अपना ध्येय मानती हैं। इन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, ज्ञान–विज्ञान एवं न्यायिक क्षेत्र में स्त्रियों के प्रति अपनाए गये दोहरे मानदण्डों को प्रस्तुत किया है। अनामिका, कात्यायनी, रचना जायसवाल, सविता सिंह और निर्मला पुतुल सरीखी कवित्रियां अपने अनुभव को रचनात्मकता में ढ़ालकर समाज में स्त्रियों के स्थान को दर्षाती हैं। पाम्पराओं और अपने लम्बे जीवनानुभवों के माध्यम से वे स्त्रियों के दोयम दर्जे को समझ पायी हैं। अतः वह समाज को अपनी रचनात्मकता के द्वारा जागरूक करने निकल पड़ती हैं। इसके लिए कभी वह लोक कथाओं का सहारा लेती हैं तो कभी जो समाज में देखा सुना, समझा यानी अनुभव का।

यह स्त्रियां केवल स्त्री की नियति को ही वर्णित नहीं करतीं अपितु उनकी आषा–निराषा, सुख–दुःख, राग–विराग सबका वर्णन करती हैं। इन स्त्रियों को जिन्दगी देखने, समझने, जानने की विस्तृत दृष्टि प्राप्त है। कहीं यह स्त्रियों की नियति को मार्मिक बिंबों के द्वारा प्रस्तुत करती हैं तो कहीं तन कर खड़ी हुई स्त्रियों के मज़बूत इरादों को प्रस्तुत करती हैं।

अनामिका जहां समाज में लड़की और लड़के के भेद को 'राम आ बताषा खा, राधा खाना पका, के माध्यम से व्यक्त करती है तो वहीं स्त्रियों की 'अपनी जगह से गिरकर कहीं के नहीं रहते केष औरतें और नाखून' द्वारा। अनामिका स्त्रियों की स्थिति को बच्चों के फटे कागज की तरह पढ़ा जाना, कुफ्त उनींदे कलाई घड़ी का देखा जाना, जैसे बिंबों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। अनामिका अब स्त्रियों को कायदे से पढ़े जाने की बात करती हैं। निर्मला पुतुल के यहाँ स्त्री अत्यन्त भोली है। उसका दायरा उसके गांव तक है पगडंडियां कहाँ जाती है इसका भान उन्हें नहीं है। पर निर्मला पुतुल सबको जागरूक करना चाहती हैं। जो औरतें अच्छे जीवन की चाह में महानगरों में आ गयी और कष्ट उठा रही हैं उनको समझाना चाहती हैं सविता सिंह मानती है, कि वह 'अपनी औरत हैं अपना दिया खाती हैं। यहाँ समाज के कान इतना सुनते ही खड़े हो जाते हैं। वह लांछन लगाकर स्त्री को उनके दायरे में सीमित करने के लिए तैयार बैठा है। पर यह रचनाकार समाज को यह बता रही हैं कि अब उनकी चालाकी नहीं चलेगी।

इस प्रकार, समकालीन स्त्री रचनाकारों ने समाज में स्त्री की स्थिति का वर्णन करते हुए उसमें परिवर्तन की आकांषा व्यक्त की है।